सुर साधना

समाज में और प्रकृति के साथ सुर-ताल की साधना
ज्ञान मार्ग

अनियमित पत्रक **वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल** सीमित वितरण के लिए

साईं वही ज्ञानी है, जो जाणे पर पीड़

वर्ष 1, अंक 4, जनवरी 2023
सहयोग राशि रु. 10/-

'लोक' और 'लोकनीति'

लोक' यानि वह दुनिया जो हमारे आस-पास है. धरती, आकाश, बादल, मौसम, नदी, पहाड़, पेड़-पौधे, प्राणि-जगत्, मनुष्य-समाज सभी इसमें हैं.

मनुष्य-समाज की खुशहाली का आधार इस पूरे लोक की खुशहाली में है.

'लोकनीति' यानि जीने के ऐसे प्रकार जिनके माध्यम से इस लोक को सतत् सभी की खुशहाली की ओर ले जाया जा सके. यानि सहजीवन की ऐसी व्यवस्थाओं का विचार बनाना जिनमें दुःख, अन्याय, ज्यादती करने वाले कदमों को रोकने में समाज समर्थ बने.

वाराणसी ज्ञान पंचायत

वाराणसी ज्ञान पंचायत यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान-मंच है. मान्यता यह है कि हर मनुष्य, स्त्री और पुरुष, ज्ञानी है. यह ज्ञान-पंचायत ज्ञान पर जन-सुनवाई का रूप भी है. इस पंचायत में पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्रोफ़ेसर और सामान्य गृहिणी, कृषि वैज्ञानिक और किसान, टेक्सटाइल इंजीनियर और बुनकर, जल वैज्ञानिक और मल्लाह के ज्ञान में ऊँच-नीच नहीं की जाती और सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा रहता है.

सम्पादकीय

वाराणसी समाज

वाराणसी नगर निगम के चुनाव आगे सरका दिए गए हैं. नागरिक क्या करें ? एक तरफ राजनीतिक व्यवस्था और उसका एक गणित है और दूसरी तरफ प्रशासनिक व्यवस्था है, जिसका अलग ही गणित है. नागरिक की समस्याओं के हल के लिए दोनों की बेरुखी है. सरकारी व्यवस्थाओं के विविध विभागों और निकायों के बीच बेमेल रिश्तों की छवि बनाये रखना तो पूंजीवादी राजनीति, नौकरशाही और प्रशासन का चरित्र रहा है. इसके चलते वाराणसी समाज की समस्याओं के हल होने का रास्ता निकलता नहीं दिखाई देता.

नागरिक क्या करें? सुर साधना के मार्फ़त 'लोक' और 'लोकनीति' की अवधारणा पर चलाई गई बहस से शायद इस सवाल का जवाब खोजने में मदद मिले. नगर के सामान्य नागरिकों की पहल (ज्ञान, कार्य और जीवनमूल्यों से संयुक्त) और इस नगरी से उनका लगाव हमें उस मुकाम पर निश्चित ही पहुंचाएगा जहाँ बुद्ध, कबीर, रविदास और गांधी जैसे संतों के दर्शन से प्राप्त प्रकाश ने लोक और लोकनीति के अपने समय के रूप उजागर किये थे.

अब जब नगर निगम के चुनाव आगे सरका दिए गए हैं तो यह सोचने के लिए हम मजबूर हैं कि तमाम समस्याओं के प्रति हम नागरिक क्या रुख अपनाएं? गन्दा पेय जल, उबड़-खाबड़ सड़कें, सीवर का अभाव और जल जमाव से बस्तियों की बदहाली, अस्त-व्यस्त परिवहन, बाज़ारों का उद्दंड रूप आदि आदि जैसी अनेक समस्याओं का पसारा समेटने के लिए नागरिक का बल (सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, सहयोगिता से संयुक्त) कैसे बनेगा? ऊपर जिन लोक कल्याणकारी संतों का ज़िक्र है उनकी वाणी सुनें तो यह बात समझ में आती है कि लोकनीति का रूप खिलकर तब सामने आता है, जब नागरिक अपनी पहचान समाज में विसर्जित करें.

वाराणसी में रहकर जो भी व्यक्ति अन्न ग्रहण कर रहा है, चाहे वह किसी भी जाति और धर्म का हो, वाराणसी-समाज का अंग है. वाराणसी के नागरिक का बल, वाराणसी समाज में बसा है. वाराणसी की बुनियाद इसी बल पर तो बनी है. हमारी समस्याओं के निराकरण का मार्ग इस बल को हासिल करने में ही हो सकता है.

ज्ञान वही जो लोकहित साधे, वरना तो वह अज्ञान कहलाता है.

विकास के दो मॉडल : खेती बनाम हवाई अड्डा

खिरिया बाग़ में वाराणसी के सामाजिक कार्यकर्ताओं की आवाज़

आजमगढ़ में जबरदस्ती भूमि अधिग्रहण के विरोध में खिरिया बाग में चल रहे धरने के समर्थन में वाराणसी से लोकविद्या जन आंदोलन की चित्रा सहस्रबुद्धे, सुनील सहस्रबुद्धे, जय किसान आंदोलन के रामजनम, मां गंगा सेवा समिति के हरिश्चन्द्र बिंद, भारतीय किसान यूनियन के कृष्ण कुमार क्रांति और कमलेश कुमार गए थे।

सुनील सहस्रबुद्धे ने कहा कि ये संघर्ष जो आपके ऊपर थोपा गया है। न्याय के लिए हम इस संघर्ष में आपके साथ हैं। वो आपको उजाड़ने आए तो आपने उसे नामंजूर कर दिया और ऐलान किया **'न जमीन देंगे न जान देंगे, अपनी जिंदगी वापस लेंगे'**। उनको एयरपोर्ट का मंसूबा वापस लेना होगा। आज सत्ता जबरदस्ती कर रही है पर जीत समाज की होगी। आपके पास जन शक्ति है।

लोकविद्या जन आंदोलन की राष्ट्रीय संयोजक चित्रा सहस्रबुद्धे ने कहा कि हम आज किसानों से सीखने आए हैं। गांव के लोग खुशहाली का रास्ता बताते हैं। किसानों ने राजनीतिक दलों को घुटने टेकने पर मजबूर किया है । समाज की एकता तय करेगी हमारी जीत।

रामजनम ने कहा कि पूर्वांचल की धरती से उभरे इस आंदोलन से एक रोशनी की किरण निकली है। इस देश का मेहनतकश अवाम आपके साथ है। इस देश में हवाईअड्डे, एक्सप्रेस वे के नाम पर किसानों को लूटा गया। इस लूट को विकास बताने वालों को यह आंदोलन एक जबरदस्त धक्का देगा। किसान आंदोलन 13 महीने चला और आप भी महीनों की तयारी में हैं. दोनों लड़ाइयां एक

एक हैं। ये परिवर्तन के आंदोलन हैं।

सांसद दिनेश लाल निरहुआ के एयरपोर्ट के लिए सरकारी जमीन ली जा रही है वाले बयान पर किसान नेता राजीव यादव ने कहा कि ग्रामसभायें तय करेंगी की जमीन देंगे कि नहीं, किसी सरकार को यह तय करने का अधिकार नहीं कि वो हमारी जमीन ले ले। निरहुआ को जान लेना चाहिए ये फ़िल्म का शो नहीं जीवन बचाने की लड़ाई है। खुद को किसान का बेटा और उसके हक छीनने नहीं देंगे का डायलॉग बंद कर निरहुआ को खिरिया की बाग में बैठी माताओं-बहनों से बात करनी चाहिए।

हरिश्चन्द्र बिंद ने कहा कि किसान आंदोलन ने साफ किया कि तुम्हारे जन विरोधी कानूनों को नहीं मानेंगे। इस लड़ाई में हम आपके साथ हैं। जहां भी जमीन छीनी गई उनको फिर छत नहीं मिली। इस तानाशाही का जवाब हमें गांधी के रास्ते देना होगा।

कृष्ण कुमार क्रांति ने कहा कि सरकार ग्राम देवता किसान को उजाड़ना चाहती है। मेरा कहना है कि किसानों को न छेड़े।

मोर्चा के संयोजक रामनयन यादव, भीम आर्मी के एके आनंद, अमीर चंद यादव, रामआसरे प्रभकार, जसवंत प्रधान, ऋषि यादव, रंग बहादुर, शक्तिमान ने भी धरने को संबोधित किया।

-रामजनम, स्वराज अभियान, वाराणसी

ऐसा चाहों राज मैं, मिले सबन को अन्न
छोट बड़ो सभै सम बसें, रैदास रहें प्रसन्न

फ्लैट रेट बिजली का खात्मा : बुनकर समाज के साथ धोखा है.

दिनांक 11-01-2023 को बुनकर साझा मंच वाराणसी की बैठक अमरपुर बटलोई में हुई, जिसमें वक्ताओ ने कहा की फ्लैट रेट बिजली का खात्मा बुनकर समाज के साथ धोखा है.

चुनाव के पहले और चुनाव के बाद भी बार बार फ्लैट रेट बिजली देने का वादा करने वाली उत्तर प्रदेश की सरकार किसके दबाव में अपने वादे से पलट रही है?

उत्तर प्रदेश की सरकार ने फरवरी 2021 को यह आदेश जारी किया था कि जब तक मंत्री परिषद की कोई टिप्पणी या शासन का कोई आदेश ना आ जाए तब तक बुनकरों से बकाया एरियर की वसूली ना की जाए और ना ही उनका कनेक्शन काटा जाए. तथा पुराने फ्लैट रेट पर ही पैसा जमा किया जाए. तो फिर किसके आदेश पर बिजली विभाग ने यूनिट रेट पर बिजली बिल वसूलने का फरमान जारी किया?

बैठक की राय यही रही कि अगर उत्तर प्रदेश सरकार तुरंत मामले का समाधान नहीं करती है तो बनारस के बुनकरों और उनके कपड़े का व्यवसाय को बरबाद होने से कोई रोक नहीं सकता.

बिजली विभाग को अपना यह आदेश वापस लेना चाहिए. ऐसा न हो तो बनारस के बुनकर एक बार फिर आंदोलन के लिए बाध्य हों. आखिर सरकार को सुनाई दे इसके के लिए हमारे पास क्या तरीके हैं?

बैठक में प्रमुख रुप से मनीष शर्मा, फजलुर्रहमान अंसारी ,शहनवाज अख्तर अंसारी, सेराज अहमद, मोहमद अहमद ,एकलाख अहमद , मोहर्रम अली , एकबाल अहमद ,जीशान अलम, इश्तियाक अहमद, इरशाद अहमद,नसरुद्दीन, अब्दुल मतीन, जुबैर अहमद,जमाल अहमद आदि लोग थे।

फजलुर्रहमान अंसारी
बुनकर साझा मंच वाराणसी

ठेला पटरी दुकानदारों के लिए नया साल अँधेरा लेकर आया

गुरूवार, 29 दिसंबर, 2022 को ट्रैफिक पुलिस ने लंका बीएचयू हॉस्पिटल के बाहर सर्वे कृत स्टेट वेंडरों को अवैधानिक रूप से बलपूर्वक हटा दिया जिसके कारण वहां के दुकानदारों के सामने भुखमरी पैदा हो गई है, जिसकी शिकायत 5 जनवरी 2023 को सभी उच्च अधिकारियों को प्रार्थना पत्र देकर अपनी आजीविका और न्याय की मांग की गई है. लेकिन आज तक 18 दिन हो गया कोई भी सुनवाई नहीं हुई और हम ठेले-पटरी के दुकानदार भुखमरी में मर रहे हैं. विरोध में लंका के पटरी दुकानदार 18 जनवरी, 2023 को 10:00 बजे से हॉस्पिटल के बाहर धरने पर बैठने और अपनी आजीविका और न्याय की मांग करने की घोषणा की.

चिंतामणि सेठ
अध्यक्ष, गुमटी व्यवसाई समिति, लंका, वाराणसी
मोबाइल नंबर 7887241035

वाराणसी के विविध समाज और उनके ज्ञान तथा कार्य ही वाराणसी के अलौकिक जीवन संगीत को गढ़ते हैं, सुरीला बनाते हैं. यह संगीत हम सबकी विरासत है. इन समाजों के प्रति बेरुखी इस संगीत को बेसुरा करती है. वाराणसी ज्ञान की नगरी है और वाराणसी ज्ञान पंचायत इस नगरी की ज्ञान-धारा के प्रवाह को निर्मल, नितनवीन और अविरल बनाये रखने का मंच है.

अनगढ़-मनगढ़

पिछले अंक से जारी...

"संगठन पाखण्ड का घर बन जाता है, यह तो हम आज देख ही रहे हैं. लेकिन जीवन में संगठन के महत्त्व को नकारा भी तो नहीं जा सकता." मनगढ़ चाय की चुस्की लेते हुए बोले. फिर सोच कर बोले "तो..., यह तो बड़ा संकट है !"

"हं...हाँ, है तो..." होठ चबाते अनगढ़ बोले. " हम गड़हे में फंस गए हैं, बाबू ! संगठन के माने ब्योअस्था ही नं होई ? पर ब्योअस्था ही सब कुछ नाहीं ना हौ ? भगवान नाहीं ना हो गईल. अरे, इक ढ़ांचआ ही न हौ. भगवान की मूर्ति भी एक ढांचा ही हौ नं? एम्मे भगवान नाही हौ ये तो सब जनतै बा, पर मूर्ति के पूजी जाला की नाही? फिर मूर्ति विसर्जित कर नई मूर्ति भी बन जात हौ ? का मतलब भयल ? समझला की नाही?"

"हं, हं, सही बात तो है पर..." -मनगढ़

"अबे, सत्ता या राजनीति के संगठन बनाय वास्ते सामाजिक सहमति होवे के चाही की नाही? संचालन के नियम आदि बनावे में भी चाही, इसको सब कोई जानीला अऊर मानिला भी." अनगढ़ बोले और दोनों रास्ता पार कर दूसरी पटरी पर आये.

अनगढ़ अपनी खुरदरी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले "संकट दूसरी तरह का हव. **अगर ये सर्व सहमति से होना है, तो व्यवस्था का पैमाना निर्णायक बन जाता है, लेकिन बड़ी आसानी से इसे नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है. दूसरी बात, यह भी कि व्यवस्था को नितनवीन बनाने की ज़रूरत होती है और ऐसा करने में अगर सबके हित की प्राथमिकता न रहे तो व्यवस्था लुटेरों का घर बन जाती है. यही हो रहा है.** अरे सोचो, डेढ़ सौ करोड़ लोगों की व्यवस्थाओं के लिए 500-600 सांसद सब तय कर लेते हैं !"

"राजनीति और लोकनीति में यही तो अंतर है. राजनीति में पैमाने के सही होने का आग्रह नहीं है और इसलिए भी इसके हर कदम पर पाखंड है." कहते हुए अनगढ़ हाथ झाड़कर जाने के लिए उठ गए.

"लेकिन **पैमाने से** आपका मतलब क्या है?" मनगढ़ ने कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा.

"कल संझा के मैदागिन पर दिनेश की दुकान पर आवा त बात हुई."

---अगले अंक में जारी

अपील

वाराणसी-समाज का गौरव स्मारक बनाया जाए

वाराणसी समाज की अद्वितीय पहल का एक स्मारक शहर के बीच बनाया जाना चाहिए. अंग्रेज़ों की अन्यायपूर्ण कर नीतियों के खिलाफ वर्ष 1810 में वाराणसी के नागरिकों ने अहिंसक असहयोग आन्दोलन छेड़ा था. इसमें शहर के सिकरौल इलाके यानि कैंट स्टेशन के आस-पास के इलाके में, जहाँ उस समय का प्रशासन था, लगभग बीस हज़ार लोग घर-बार छोड़कर कई दिनों के लिए धरने पर बैठ गए थे. कुछ रपटें तो एक लाख से ज्यादा बताती हैं. वाराणसी सूबे के हर घर से लोग इसमें शामिल हुए थे.

इस आन्दोलन में शहर के हिन्दू, मुस्लिम, सभी तरह के कारीगर, लोहार, जुलाहे, नाई, मिस्त्री, दर्जी, कहार, आदि एकमत होकर शामिल हुए थे.

इतिहास में एक बहुमूल्य वैचारिक और ठोस कार्य की मिसाल के रूप में वाराणसी-समाज की इस पहल को याद किया जाता है. इस भूमि की प्रतिरोध की परम्परा यही रही, जिसे यह आन्दोलन उजागर करता है. यह वाराणसी-समाज की अनमोल धरोहर है, जो सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगी.

वाराणसी-समाज की एकता और आत्मबल का प्रतीक यह स्मारक वाराणसी स्टेशन के सामने या कलेक्ट्रेट के पास बनाया जाना चाहिए.

वाराणसी ज्ञान पंचायत के लिए लोकविद्या जन आन्दोलन, भारतीय किसान यूनियन, स्वराज अभियान, बुनकर साझा मंच, माँ गंगाजी निषादराज सेवा समिति द्वारा संयुक्तरूप से संयोजित.

[संपर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे (9838944822), लक्ष्मण प्रसाद (9026219913), रामजनम (8765619982), फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (7905245553), हरिश्चंद्र बिन्द (9555744251)**] पता :** विद्या आश्रम, सा 10/82 अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007